पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

नदराम

मूल (असमीया) : शरतचंद्र गोस्वामी
अनुवादक : संजीव मण्डल

1

1918 ई. के अक्टूबर महीने की रात नौ-दस बजे हम कुछ साथी खुले बरामदे में बैठकर 'प्लान्शेट' खेल रहे थे। महामारी 'इन्फ्लूएंजा' तब तक उतनी भयावह रूप में फैली नहीं थी; इसी कारण मौसम थोड़ा ठण्डा होने पर भी बाहर बैठने में डर या असुविधा का अनुभव नहीं हुआ।

उपस्थित मण्डली का कोई भूत-प्रेत को मानता है, कोई नहीं मानता, कोई 'प्लान्शेट' में भूत होता है, ऐसा विश्वास करता है, कोई 'प्लान्शेट को 'प्लेइन चिट' (Plain Cheat), 'कोरा छल' मानता है।

एक बार 'प्लान्शेट' खेलते हुए नदराम नाम लिखकर प्रश्न किया-

'तुम्हारा नाम?'

'नदराम'

'क्या चाहिए?'

'फ्रांस में युद्ध लड़ा है।'

'घर कहाँ है?'

'गोवालपारा।'

'क्या चाहते हो?'

'मेरी औरत'-

सभी ने ठहाका लगाया। प्लान्शेट खेलने वाले दो जनों में से एक ने 'जाओ, जाओ तुम्हारी औरत यहाँ नहीं है' कहकर 'प्लान्शेट' खेलना छोड़ दिया। हमारा अविश्वासी दल और अधिक संशय-शून्य हुआ कि 'प्लान्शेट' बहुत बड़ा छल है।

उसके बाद, इन्फ्लूएंजा के प्रबल आक्रमण के आतंक और रात को रोगशय्या पर न पड़े रहने के जो दो-चार दिन थे, उन दिनों हर शाम 'प्लान्शेट' खेलते और हर दिन नदराम की आमद होती। पर हम में से कोई उस पर ध्यान नहीं देता- 'प्लान्शेट' पर नदराम लिखकर ही हम खेल छोड़ देते, नदराम के संवाद छूट जाते।

2

प्राय: एक वर्ष बाद की बात है। किसी कार्यवश नवम्बर महीने की सुबह गोवालपारा के उत्तर शालमारा बंगले में बैठा था। पिछले दिन विभिन्न प्रकार के काम में व्यस्त था। मेरे साथी की तबीयत थोड़ी खराब थी; इसलिए उस दिन अवकाश था। तभी एक वर्ष पहले 'प्लान्शेट' खेलने की बात याद आई- वही नदराम, वह सिपाही है। इस इलाके के किसी मेच या राजवंशी सिपाही का नाम नदराम नहीं हो सकता क्या?

इतने में ही सिपाही बूट पहने, टाँगों पर फीता लपेटे, सिर पर हैट, कमर में खुकरी लटकाए, 22/23 वर्षीय, गौर वर्ण का युवक चट-पट बंगले के भीतर घुस आया; और एक मिलिटरी सलाम देकर पास ही बेंच पर बैठ गया। मैं आश्चर्यचकित हुआ। सरकारी अधिकारी के

अभिमान को भी ठेस पहुँची। मैंने थोड़ा खीझकर पूछा-

'क्या चाहिए?'

'महाशय आप असमीया हैं?'

'हाँ'- सरकारी हाकिम इस प्रकार के प्रश्न पसंद नहीं करते, इसलिए बहुत संक्षिप्त उत्तर दिया।

'बहुत अच्छा हुआ। मेरी एक अर्जी ली जाए। मेरी औरत को लेकर एक झगड़ा हुआ है'।

पास का पुलिस थाना इस बंगले के साथ ही सटा हुआ है। मैं समझ गया इस व्यक्ति ने मुझे दारोगा समझ लिया है। यह सोचकर मेरी खीझ और थोड़ी बढ़ी। हाथ से इशारा करके कहा-

'थाना वहाँ है,। यहाँ नहीं' ऐसा कहकर आगे पड़ा हुआ पुराना अखबार उठा लिया।

अखबार देखकर उस व्यक्ति को और मौका मिला। उसने पूछा- "महाशय लड़ाई की क्या खबर है?" मैं चुप रहा। वह समझ गया, कि मैं उसका अपमान कर रहा हूँ। वह तुरंत खड़ा हो गया, 'हुँह, असमीया ही असमीया से नहीं बोलता है तो दूसरे क्या बोलेंगे! जाता हूँ।' यह कहकर वह तुरंत चला गया।

मैं थोड़ा अनुतप्त हुआ, सोचा हाकिम की तरह व्यवहार करना ठीक नहीं हुआ। उस व्यक्ति को बुला लाया, बैठने को कहकर पूछा-

'तुम्हारा नाम क्या है?'

'नदराम।'

नदराम, औरत का मामला। एक वर्ष पहले की स्मृतियाँ जाग्रत हो गईं!

'तुम फ्रांस युद्ध करने गए थे?'

'हाँ। महाशय ने कैसे जाना?'

उसके प्रश्न पर ध्यान न देकर बोला-

'बोलो तो भाई, तुम्हारा औरत को लेकर क्या झगड़ा हुआ है!'

3

नदराम की कहानी यह है-

प्राय: दो वर्ष पूर्व वह युद्ध लड़ने गया था। जाने से छ: महीने पहले उसने उसके गाँव की ही एक लड़की से शादी की। लड़की सुंदर थी, बहुत दिनों की जान-पहचान थी।

फ्रांस के किसी जगह युद्ध करते वक्त उसे अचानक एक दिन चिट्ठी मिली, उसकी पत्नी उसके हमउम्र और हमजोली भाटिराम के पास चली गई है; बूढ़े माँ-बाप के दु:ख की सीमा नहीं है।

कमाण्डेंट अफसर को नदराम ने पूरी बात बताई। अफसर ने उसकी चिट्ठी लेकर जिला के डिप्टी कमिश्नर के पास भेजा; पर बहुत दिनों तक कोई फैसला नहीं हुआ।

इसके बाद फ्रांस में मौजूद भारतीय सेना के साथ इजिप्ट, मेसोपटेमिया जैसी जगहों पर बहुत दिन घूमने के बाद नदराम भी महीने-डेढ़ महीने पहले घर पहुँचा है।

घर पहुँचकर ही उसके मामले का फैसला करने के लिए लोगों को जुटाया था; पर भाटिराम कोई बात नहीं मानता।

उसकी पत्नी के भाटिराम के पास चले जाने का उसे उतना अफसोस नहीं है; क्योंकि भाटिराम की माली हालत अच्छी है, वह देखने-सुनने में भी

आकर्षक है; और पहले से भाटिराम के साथ उसकी पत्नी की प्रीति थी। पर अफसोस की बात यह है कि उसके घर में न रहते माँ-बाप को इतना दु:ख देकर उसे ऐसा काम नहीं करना चाहिए था। उसके युद्ध में घायल होने पर माँ-बाप की कैसी दुर्दशा होती!

कहने की जरूरत नहीं है कि इसका फैसला मेरे द्वारा होता न देखकर नदराम को थाना जाने के लिए कहा।

प्राय: एक घण्टे बाद नदराम थाने से लौटा। थाने में उसने समाधान पाया कि आठ-दस दिन के भीतर बड़े साहब उन क्षेत्रों में आयेंगे; उसका मामला बड़े साहब के सामने जुबानी बयान करने पर; साहब उसी समय उसका सही फैसला करेंगे।

नदराम ने सोचा, वह युद्ध से लौटा हुआ सिपाही है, राजा के लिए युद्ध करते हुए घूमते यदि कोई उसकी औरत ले जाए, वैसे में राजा के गौरव की रक्षा कैसे होगी ?

4

जिला के बड़े साहब किसी स्टेशन पर उतरकर उसके पास ही इंस्पेकशन बंगले में ठहरे हैं। नदराम ने उसकी फरियाद बड़े साहब के सामने पेश की। साहब ने हुक्म किया कि उन लोगों के गाँव जाकर अगले ही दिन इस मामले का सही फैसला करेंगे।

गाँव में गाँव का मुखिया, मेम्बर जैसे बहुत से लोग उपस्थित हैं। बड़े साहब चलकर उस जगह पहुँचे। नदराम, भाटिराम और लड़की को हाजिर किया गया। साहब ने गाँव के मुखिया और नदराम के बूढ़े बाप से सारी बातें सुनीं; सुनकर हुक्म दिया; 'लड़की इसी वक्त नदराम के घर जाए, और भाटिराम को धुबुरी भेजा जाए, वहाँ उसका फैसला होकर जेल होगी। यदि राजी-खुशी लड़की नदराम के साथ गृहस्थी नहीं करती है तो उसे भी जेल भेजा जायेगा'।

5

गोधूली का वक्त है, प्राय: साँझ होनेवाली है। बंगले के चौड़े बरामदे में इजी-चेयर पर बैठे बड़े साहब, पास ही एक छोटी तिपाई के ऊपर हरा ढक्कन लगा लैम्प और बड़े साहब के हाथ में अखबार है।

एक व्यक्ति मिलिटरी बूट की आवाज करते हुए एकदम से साहब के सामने हाजिर हो गया- हरकतों में थोड़ा भी संकोच का भाव नहीं है। साहब ने थोड़ा खीझकर पूछा- 'कौन?'

'हुजूर हम नदराम है।'

'किया मांगता?'

'हुजूर, भाटिराम को माफ कर दिया जाए'।

'क्या?'

'हुजूर भाटिराम को छोड़ दिया जाए।'

'भाटिराम तो तुम्हारा दुश्मन है?'

'हाँ हुजूर। पर वह लड़की रो-धोकर व्याकुल हो गई है। क्या पता भाटिराम को न पाने पर आत्मघाती हो जाए। बोलती है कि उसने भाटिराम की यह हालात की, भाटिराम को कुछ होने से वह जरूर जिंदा नहीं रहेगी'।

'वह औरत तुम्हें नहीं चाहिए?'

'चाहने से क्या होगा हुजूर! मेरे साथ वह राजी-खुशी नहीं आई जब, उसे रखकर क्या लाभ होगा? भाटिराम के साथ ही रहे!'

'तुम्हें मुकदमा करना अच्छा नहीं लगा तो किया क्यों?'

'हुजूर के हुक्म ने राजा का मान रखा, मेरा मान बचाया। अब मैं खुद खुशी से छोड़ रहा हूँ।'

'तुम्हारे बुड्ढे माँ-बाप?'

'बुड्ढे माँ-बाप को हुजूर समझा दूँगा, राजी-खुशी नहीं है तो लड़की के साथ गृहस्थी करके क्या लाभ होगा?'

बड़े साहब एक मुहूर्त रुके रहे! उसके बाद बोले, 'नदराम तुम एक सच्चे आदमी हो। भाटिराम को हम मुक्त कर देंगे।'

टिप्पणी :

शरतचंद्र गोस्वामी का जन्म 12 मई 1887 ई. में और मृत्यु 19 दिसम्बर 1944 ई. में हुई थी। नदराम कहानी उनकी 'मयना आरु आन आन गल्प' नामक कहानी संग्रह में संगृहीत है। यह कहानी संग्रह 1920 ई. में प्रकाशित हुई थी।

संपर्क-सूत्र:
शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय